जुलाई-सितंबर 2024

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	-	4z00 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)
पाँच वर्ष	-	1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)
संरक्षक	-	10,000 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

जुलाई-सितम्बर : 2024 (त्रैमासिक)

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक
डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल
अविनाश बागड़े (नागपुर)
देवेन्द्र नारायण दास (बसना)
केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल
साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554
मो.नं. – 7828104111

संपादकीय.....

ज़ेन की ऐतिहासिक उत्पत्ति प्रारंभिक भारतीय बौद्ध धर्म से हुई है। जापान में 'ज़ेन' जिसका अर्थ है ध्यान, चीनी शब्द 'चान' के लिप्यंतरण से लिया गया है। चीनी 'चान' संस्कृत शब्द 'ध्यान' का लिप्यंतरण है। जेन में 'सांसों की गिनती के अवलोकन' का बड़ा महत्व है । जब कोई ज़ेन ध्यान में संलग्न होता है, तो अभ्यासकर्ता आम तौर पर तीन-चरणीय प्रक्रिया शरीर, श्वास और मन को समायोजित करने पर केन्द्रित होता है।

हाइकु नाम और रूप स्वयं जापान से आए हैं, क्योंकि यह शब्द जापानी भाषा से आया है। 'हाइ' का अर्थ 'श्वास' एवं 'कु' का अर्थ 'कविता' यानी हाइकु का सम्मिलित अर्थ 'साँसों की कविता' या 'श्वास भर की कविता' है।

पारंपरिक जापानी कविता हाइकु में प्रकृति या मौसमी परिवर्तन का एक विशिष्ट संदर्भ होता है, जिसे 'किगो' कहते हैं साथ ही कविता के बीच में एक "काटने वाला शब्द" होता है, जिसे किरेजी के रूप में जाना जाता है।

हाइकु कवि को एक अच्छे हाइकु के सृजन के लिए बुनियादी चार चरण पर चिंतन परम आवश्यक है । सर्वप्रथम विषय वस्तु या घटना के प्रति मन की एकाग्रता। दूसरा - विषय वस्तु या घटना के प्रति एकाग्रता के उपरांत उसके विशेषण एवं उसकी क्रियाओं पर विचार कर वस्तु या घटना से जोड़ते हुए भाव व भाषा

प्रदान करना। तीसरे चरण में छवि व भावना को पकड़ कर प्रारुप तैयार करना। चतुर्थ एवं अंतिम चरण में 5-7-5 पैटर्न के अनुसार आवश्यक संशोधन करना अपेक्षित होगा।

हाइकुकारों में विषय के प्रति एकाग्रता महत्वपूर्ण है। हाइकुकार एकाग्रता पूर्वक लेखन से ही हाइकु लेखन में सिद्धहस्त हो सकते हैं। हाइकुकारों से हमारी अपेक्षा रहेगी कि उलूल-जुलूल विषयों पर अधिक संख्या में हाइकु रचने की अपेक्षा कम और उत्कृष्ट हाइकु रचने पर केन्द्रित रहना ज्यादा महत्वपूर्ण और उचित होगा।

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा

अंक के रचनाकार

अजय चरणम् , अनिमा दास, अभिषेक जैन, अमिता रवि दुबे, अमिता शाह 'अमी', अर्चना अनुपम, अलका पांडेय, अलंकार आच्छा, अविनाश बागडे, डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य 'आनन्द', आभा दवे, आरती परीख, आशा ज्योति, डॉ. उषा माहेश्वरी पुंगलिया, ए.ए. लूका, एस. के. क्र "श्री हंस", अंशु विनोद गुप्ता, कपिल कुमार, कल्पना दुबे, कल्पना भट्ट, कविता नेमा 'काव्या', कश्मीरी लाल चावला, कामिनी गोलवलकर, कुंदन पाटिल, केशव शरण, गंगा प्रसाद पांडेय 'भावुक', चिन्मय शुक्ल, चंद्रभान मैनवाल, जयप्रकाश मिश्र, ज्योतिर्मयी पंत, दीपावली गुप्ता, निगम राज, निर्मल जैन 'नीर', निहाल चन्द्र शिवहरे, पवन कुमार जैन, प्रतिभा त्रिपाठी, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', प्रमोदिनी शर्मा, प्रवीण सिंह बी. सिन्दल, पुष्पा मेहरा, पुष्पा सिंघी, भैरव प्रसाद मेहरा 'कबीर', मधु गुप्ता 'महक', मनीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, मीता अग्रवाल, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', मुकेश शर्मा 'ओम', मंजु महिमा, डॉ. मंजू यादव, रविवाला ठाकुर, डॉ. रश्मि वार्ष्णेय, राजकिशोर राजपूत, राजकुमार चौहान, राजीव नामदेव 'राना लिधौरी', राजेन्द्र सिंह राठौड़, रूबी दास 'अरु', लवलेश दत्त, वृंदा पंचभाई, विद्युत प्रभा 'प्रभा', प्रो. विनीत मोहन औदिच्य, डॉ. विभा प्रकाश, शर्मिला चौहान, शशि मित्तल 'अमर', डॉ. शेख अब्दुल वहाब, स्वाति गुप्ता 'नीरव', सत्येन्द्र छिब्बर, सुनीता दीक्षित 'श्यामा', सुभाष शर्मा, डॉ. सुरंगमा यादव, सुरेन्द्र बांसल, सुशील शर्मा, सोनम यादव, हरावती लकड़ा, हंस जैन, डॉ. श्रद्धा वाशिमकर, श्रवण चोरनेले 'श्रवण', श्रीराम साहू, इंदिरा किसलय

●

उत्कृष्ट हाइकु

रात बोलो तो
कब से मौन है तू
चाँद जा रहा।

कोयल बोली
कुहू कुहू कहाँ तू
आकर तो छू।

~ अजय चरणम्

गहराई है
किंतु सागर नहीं
महाकाश है।

मृत्यु कलिका
जैसे अर्ध यामिनी
लुप्त तारिका।

प्रेम हंसिका
ज्योत्स्ना-स्नात संध्या सी
मुक्त शुक्तिका।

हे शोकांतिका
अंतिम दीपक की
शेष वर्तिका।

सम्पूर्णता में
तृष्णा का आवरण
मैं असंपूर्णा।

कौन है शांत ?
प्रकृति ? स्त्रीत्व ? सत्व ?
सब है भ्रान्त।

रंगमंच है
एक है यवनिका
केवल मृत्यु।

निर्मल जल
तरल सरल किंतु
हुआ गरल।

नदी की त्वरा
जीवन का प्रवेग
अस्थिर सदा।

एक सिद्धांत
किंतु भिन्न दिगंत
जैसे पवन।

~ अनिमा दास

सेल्फी प्वाइंट
ध्यानमुद्रा में बुद्ध
मैं विचलित।

~ अभिषेक जैन

पौध रोपण
बनता अभियान
रुके दोहन।

ढूँढते छाँव
घर से पलायन
उजड़े गाँव।

उजड़ा डेरा
छाँव विहीन पंछी
नहीं बसेरा।

~ अमिता रवि दुबे

रेत का घर
लहरें बिखेरतीं
खिलखिलातीं।

मेघ में चंदा
फैलाए ज्ञान रश्मि
बुद्ध पूर्णिमा।

रोकना नहीं
आता हुआ सैलाब
टूटते ख्वाब।

उड़े सपने
बैठ बादल पंख
बसते नैन।

मार्गदर्शक
राह से भटकाते
मूक दर्शक।

फूटी गागर
प्रेम जल से भीगी
सहमी नार।

टूटा है पत्ता
हवा दिखलाएगी
अपनी सत्ता।

बालों में मिट्टी
भूले उम्र तकाजा
राहों में गिट्टी।

रंगरेज है
पिया की मोहब्बत
चढ़ी रूह पे।

आँखें हैं चिट्ठी
पढ़ लेना जरूरी
खबर पूरी।

प्यार के गीत
मिलन के वो पल
सहेजे मीत।

कोंपल फूटी
माली को मिल गई
जीवन बूटी।

~ अमिता शाह 'अमी'

होरी के गीत
बज रहे नगाड़े
अहा ! अबीर !

~ अर्चना अनुपम

फागुन आया
मुस्करा उठा ढाक
झरते पात।

~ अलका पांडेय

ब्याहा बसंत
पेड़ों पे लद आये
बाराती पत्ते।

बेटी का ब्याह
सोने नहीं दे रहे
सोने के भाव।

जीवन - नाव
तुम्हारी बेवफाई
नाव में छेद।

थोड़ा ही बचा
कनस्तर में आटा,
पानी पीती माँ !

रात की गाड़ी
चाँद-तारे हाँकते
ग़प्पों के घोड़े।

बाँध के रखे
जीवन भर पिता
नैनों में बांध !

आने में देरी
देहरी पे आ बैठी
अम्मा की आँखे।

मन के दाग़
होली पे दाग देना
तभी तो फाग।

तन-आधार
स्वेद से चित्रकारी
उकेरे गर्मी।

~ अलंकार आच्छा

पूरा संसार
एक शक्ति का नाम
उन्हें प्रणाम।

मनमोहक
सुबह ये सुहानी
नई कहानी।

किरणमयी
वसुंधरा हो गई
सुबह हुई।

नूतन वर्ष
नव वैचारिकता
यही उत्कर्ष।

सुंदर भोर
सुकुमार किरणें
चंचल हवा।

~ अविनाश बागड़े

नव पल्लव
नव रुप धरते
विहसे तरू।

~ डॉ. आनन्द शाक्य

नभ आँचल
धरा सुंदरी छुपी
फूलों से ढकी।

नभ आँगन
बादलों का चमन
मुग्ध है मन।

फागुन माह
उमंग भरा हुआ
खुशी की चाह।

धूप -टुकड़ा
खिड़की में आ बैठा
तेज मुखड़ा।

अमलतास
धारण पीले वस्त्र
सुंदर छत्र।

बादल छाए
वर्षा संदेश लाए
मन रिझाए।

शब्दों का जादू
मन लाए भूचाल
करे कमाल।

पेड़ की छांव
याद आते हैं गांव
भूत के पांव।

वो कामगार
सिर पर आकाश
बेपरवाह।

प्रकृति रूप
निखरे कागज पे
कविता धूप।

~ आभा दवे

झुर्रियां पड़ी
तन्हाई की सरिता
आँखों से बही।

चुगने आते
हमारी तन्हाईयाँ
यादों के पंछी।

रिश्ते बिछड़े
गले लग गई है
उनकी यादें।

नसीबवर
लम्हें बांटते फिरे
अमीर रिश्ते।

सुकून छिने
इर्द-गिर्द घूमते
खोखले रिश्ते।

बोझिल रिश्ते
सैलाब उमड़ता
मन सागर।

कंक्रीट वन
हरियाली निगले
रिश्ते बिछड़े।

जीवन रेल
जुड़ते या छूटते
दिलेरी रिश्ते।

छूटे न टूटे
अजीब कश्मकश
लहू के रिश्ते।

जिंदा रखती
बोलती शिकायतें
दिल के रिश्ते।

खामोशियों से
जीवन भर टिके
पेचीदे रिश्ते।

खेतों के बीच
परबत सा खड़ा
फसल टीला।

दिवस लुप्त
समुद्र में घुलती
केसरी धूप।

संध्या स्वरुप
नदियाँ में नहाती
फकीरी धूप।

बिखर रही
सूरज की किरणें
सुहानी शाम।

रवि का ठेला
समंदर में गिरा
सांझ की बेला।

रवि चरखा
आराम फरमाता
निशा निखरें।

क्षितिज बैठा
दिनचर्या सुनता
सूरज दादा।

ग्रीष्म की धूप
आंगन में नाचते
आग के गोले।

सूरजदेव
खजूरी पर चढा
पसीना छूटे।

काँटों की गली
महफूज़ महकें
गुलाब कली।

जंगल काटा
पेन्सिल से बनाया
सुहाना बाग़।

वो चल दिए
जानलेवा हो गई
उनकी यादें।

अकेली जान
अपनापन लिए
ढलती सांझ।

माघ की धूप
संदूक में जा छिपे
ऊनी कपड़े।

बसंत रुप
फूलों पर नाचती
मृदु सी धूप।

बच्चे बनाते
रेत लकीरें खींच
बसंत फूल।

भोर की बेला
मुंडी उठाये खड़ा
सूरजमुखी।

पन्नों में दबी
गुलाब पंखुड़ियां
यादें सुहानी।

~ आरती परीख

पाँव धुलाता
वो नीला समंदर
हमें बुलाता।

सरोवर में
डुबकी लगा रही
शाम साँवली।

~ आशा ज्योति

अमलतास
लटके हैं झूमर
डाली के पास।

गुलमोहर
रंग देता मौसम
शामो सहर।

सुर्ख सेमल
रक्तवर्ण माँसल
रंगों से छल।

लाल बुराँश
पहाड़ों पर आग
ये कैसा फाग।

चिड़िया दिन
कैसे मना पाओगे
चिड़िया बिन।

~ इंदिरा किसलय

फिजा में घुली
तुम्हारी है महक
प्यारी चहक।

अद्भुत होती
मां की सीख दुआएं
ताउम्र याद।

~ डॉ. उषा माहेश्वरी
पुंगलिया

उम्र बढ़ता
अनुभव खज़ाना
भरता जाता।

भ्रम सदैव
बिखेरता है रिश्ते
पालें न इसे।

छत्तीसगढ़ी हाइकु

भुलाबे झन
मया धरे रहिबे
मोर सजन।

~ ए. ए. लूका

गरीबी रेखा
ऊपर उठाना है
श्रमिक लेखा।

पगार पूरी
बाल बच्चे वाले हैं
न दो अधूरी।

तपता सूर्य
गरमी झुलसाए
टूटता धैर्य।

वर्षा तैयारी
झेलना ज्येष्ठ माह
सूर्य सवारी।

सुनामी बाढ़
कभी गर्मी की ढ़ाल
सूरज लाल।

ये पॉलिथीन
क्यों पसंद है बनी
लाओ नवीन।

क्यों छोड़ा कूड़ा
प्रकृति को है तोड़ा
स्वच्छता मोड़ा।

पिताजी सख्त
घर पालनहार
ऊँचा है तख्त।

फाग फुहार
रंगों की है बौझार
प्रेम गुहार।

भाई बहना
रिश्ता अनमोल है
राखी गहना।

~ एस के कपूर 'श्री हंस'

धूप चूनर
ओढ़े गुलमोहर
शीतल छाँह।

~ अंशु विनोद गुप्ता

प्रेम के किस्से
किताबों से अधिक
होंठों पे मिले।

टेसू ज्यों झरे
प्रेम की अभिव्यक्ति
वसंत करे।

प्रेम के छंद
बिना किसी अनुबंध
वसंत लिखें।

दुःखों का डाका
इच्छाओं का रथ, ज्यों
हमने हांका।

दिन ज्यों ढले
यादों की चिंगरियाँ
मन में जले।

प्रेम ज्यों झांका
ईर्ष्या कर न सकी
बाल भी बांका।

तुम ज्यों आए
पीड़ाएँ भी, पथ में
फूल बिछाएँ।

कोई न द्वेष
स्मृतियों में अशेष
केवल प्रेम।

आँखों ने छला
प्रेम का सिलसिला
ज्यादा ना चला।

~ कपिल कुमार

सूखी है चोंच
ढूंढ़ते जलाशय
थके परिंदे।

आंगन सूना
चुग्गा -पानी ढूंढ़ते
पक्षी मायूस।

~ कल्पना दुबे

चले बादल
श्याम रंग ओढ़ते
मेघ बरसे।

भोर उठाये
सपनों को भगाए
कर्म संगत।

जीना मरना
समय का पहिया
काम घूमना।

गुड़िया रानी
होती बड़ी सयानी
घर की बेटी।

पत्नी की चाह
घर समरसता
बरसे सुख।

बिगड़े रिश्ते
बढ़ी हुई दूरियाँ
बढ़ती खाई।

~ कल्पना भट्ट

उल्लास छाया
कुदरत की माया
बसंत आया।

हर्षित मन
पुलकित है तन
उमंग लाया।

महका बाग
छलकता पराग
यौवन पाया।

~ कविता नेमा "काव्या"

आज का दौर
समाज बीच बढा
अकेलापन।

एक चेहरा
हाथ बीच गुलाब
जैसे बहार।

वक़्त का दौर
जो लोग तेजी में थे
वो चले गए।

~ कश्मीरी लाल चावला

मौसमी गर्मी
तरु वर की छाया
मन को भाया।

~ कामिनी गोलवलकर

सुहानी शाम
बगिया में बहार
आनंद वर्षा।

पक्के मकान
आशियाना ढूंढती
गौरैया दर्द।

~ कुंदन पाटिल

मेघ लायेंगे
सुहावना मौसम
जब आयेंगे।

घेर लेते हैं
चलने से पहले
रास्ते के कष्ट।

बन में टेसू
मैं फूले-फूले देखूँ
याद आए तू।

~ केशव शरण
एस 2/564 सिकरौल
वाराणसी – 221002

तपता रवि
भीगते मजदूर
वृक्ष सुदूर।

बढ़ता विष
खत्म होती प्रजाति
प्यारी गौरैया।

~ गंगा प्रसाद पांडेय
"भावुक"

प्यासी धरती
बैरी हुए बदरा
जीव बेहाल।

कानों में डाले
वृक्ष अमलतास
पीले झुमके।

फेंका पत्थर
आया पानी गुस्से में
शोर मचाया।

सूर्य ने डाला
रोशनी का फौव्वारा
दिन निकला।

सूरज डूबा
आसमान पे चढ़ी
स्वर्ण परता।।

~ चंद्रभान मैनवाल

फागुनी रंग
रचता है बसंत
प्रीत अनंत।

महके अंग
संयम प्रतिबंध
होली उमंग।

कठपुतली
दुनिया रंगमंच
जीवन खेल।

रचा ये खेल
कौन है सूत्रधार
नेपथ्य मंच।

~ चिन्मय शुक्ल

भीषण युद्ध
हृदय में विषाद
गौतम बुद्ध।

~ जयप्रकाश मिश्र

मेघ मशक
छिड़के स्वच्छ नीर
पृथ्वी जागृत

जलद घट
उड़ेल कर पानी
खुशी से उड़ें

~ ज्योतिर्मयी पंत

बरसे घन
महक उठी धरा
चहके जन।

~ दीपा गुप्ता

प्रेम करते
ज़माने में ताउम्र
फूल झरते।

नैनों के घर
यादें जीवन भर
हैं धरोहर।

सूर्य किरण
दिवस भर आती
धरा तपाती।

लू चलकर
मानव को डराती
घर बिठाती।

आग उगले
उत्तरायण सूर्य
नमी निगले।

चाँद की दीद
ख़ुशियों की बहार
मनेगी ईद।

कोयल कूके
नित मनवा हूके
प्यार न चूके।

खिली है लाली
पलाश की बहार
झूलती डाली।

चंपा के फूल
तल्ख़ियों में बने थे
दंश के शूल।

ये उंगलियाँ
प्रेम स्पर्श पाश की
हैं तितलियाँ।

सूखती झील
प्यास है मीलों मील
गले में कील।

मौत नगीना
करे रंग में भंग
जीवन-संग।

~ निगम राज़

मुँह चाँद का
प्राकृतिक नज़ारा
नीले माँद सा।

खिला वसंत
फूली केसर क्यारी
हुई तैयारी।

ढोलक थाप
होली की हुड़दंग
अपने साथ।

उठी तरंग
जीवन कैनवास
उभरे रंग।

सूर्य उदित
इंद्रधनुषी आभा
मन मुदित।

झगड़े रोज
रिश्तों में हो दूरियाँ
लगते बोझ।

सब हैं मौन
सिर्फ़ चुनावी वादे
पूछता कौन ?

अंधेरी रात
रोड लाईट तले
पढ़ता लाल।

घना कोहरा
ठंड से ठिठुरता
बुजुर्ग पिता।

ढोलक थाप
होली की हुड़दंग
अपने साथ।

ढलती साँझ
घर की ओर लौटी
रंभाती गाय।

कटते वन
चारों तरफ फैला
कंक्रीट जाल।

बहती नदी
दफ़न इतिहास
कहती संदली।

चंचल नैन
तुझे निहारे बिना
आता न चैन।

गौरैया रानी
कैसे बचाये प्राण
दाना न पानी।

~ निर्मल जैन 'नीर'

लोरी गायन
सदा मनभावन
माँ के आँगन।

~ निहाल चन्द्र शिवहरे

साँझ ने भरी
नभ की सूनी माँग
पक्षी चहके।

सुस्ताने बैठे
थके -थके बादल
वर्षा के बाद।

नहीं दिखती
स्वप्न की परछाई
स्व में बुराई।

बंद की आँखें
चोरों से घुस आए
उनके ख्वाब।

सिमट गया
धन - वैभव - ठाठ
छोटी सी खाट।

~ पवन कुमार जैन

तन कंकर
बन जाता शंकर
पीड़ा पी कर।

गुस्से में आँधी
झुक कर शाखाएँ
माँगती माफ़ी।

दिवस विदा
क्षितिज पर हुआ
सिंदूर खेला।

घना शजर
है घर के अन्दर
नीम जैसी माँ।

धूप से जंग
लड़ रहे हैं वृक्ष
हवा के संग।

देख आई मैं
वक़्त के कैदख़ाने
चित्र पुराने।

अमलतास
पहन इठलाया
पीला लिबास।

धूप का छल
थल में दिखा जल
भ्रमित जग।

निशा ने जना
तम की पीड़ा सह
सूर्य सलोना।

सजी समिधा
कुछ कटु यादों की
जली होलिका।

आया बसंत
बन कर पहुना
भू के अंगना।

खो गये ताल
चिड़िया ढूंढती है
पानी के थाल।

वृक्ष ले आया
धूप से छुपाकर
थोड़ी सी छाया।

पूस रिझाती
जेठ तपाती खूब
ठगिनी धूप।

भुक्खड़ रवि
खा जाता हरियाली
पी जाता नदी।

~ प्रतिभा त्रिपाठी

होली उल्लास
श्याम रंग है खास
प्रेम आभास।

मन उल्लास
बौराया है फागुन
गा उठा फाग।

होली आई है
बादल लाल हुए
देख अबीर।

खिले पलाश
होली में रंगी हुई
गोरी सोल्लास।

कर गुंजन
मधुकर रचता
होली के छंद।

बसंती राग
प्रीत के गीत गाते
होली व फाग।

फूले पलाश
वन में लग गई
बासंती आग।

मंद पवन
बहते हुए कहा
यही जीवन।

माँ की ममता
कवच बन कर
देती सुरक्षा।

माँ का सफर
आँचल में ममता
यादों का घर।

ढेरों कमाया
साथ न गया सिक्का
वो चला गया ।

जले पुतले
कई रावण खड़े
ताली बजाते।

प्रेम की राह
अनकहे से रहे
ढेरों जज़्बात।

मौन रहना
पत्थर ने बताया
मौज कितना।

कप में चाय
जुड़ी हुई है यादें
पहला प्यार ।

लेना न नोट
वोट देना जरुर
डंके की चोट।

तंत्र से नाता
मतदाता होते हैं
भाग्य विधाता।

~ प्रदीप कुमार दाश
'दीपक'

तेज हवाएं
झुकी कोमल दूर्वा
रक्षित सदा।

अमलतास
हवा संग झूमता
स्वर्ण झूमर।

~ प्रमोदिनी शर्मा

जलती हवा
तपता मरुस्थल
धरती तवा !

भानु उदय
सागर पर भोर
प्रकृति नटी !

धानी चादर
सरसों की रंगीनी
कनक थाल।

प्रभात वेला
आबू की वादियों में
नक्की की सैर।

सूर्यास्त वेला
अस्ताचल सूरज
सुहाग बिन्दी।

झीनी चादर
रोज कुतर जाती
बढ़ती आयु !

आतिशी हवा
सूरज का कहर
रहम कर !

~ प्रवीण बी. सिन्दल

राजस्थानी हाइकु

चँदा री ज्योति
बालू रा कण मोती
मरु महिमा।

ऊग्यो सूरज
धोरां लागे सोने ज्यूँ
मरु महिमा।

उनाळे री लू
मिरगां री बैचैनी
दीठी बादळी !

केर सांगरी
काचर नै मतीर
धोरां रौ मेवो।

ख़ेजड़ी रूँख
मरुधरा री शान
पालनहार !

रेताँ रा टूँक
चमके सोने ज्यूँ ~
ढ़लती साँझ !

~ प्रवीण बी. सिन्दल

बरसे आग
जल रहे हैं वन
आओ रे घन।

निस्पृह खड़ा
मीठे फल दे रहा
पेड़ खजूर।

फूल ख़ामोश
ख़ुशबू उड़ा चली
हवा उद्दंड।

नीर अकाल
चिरैया ढूँढ हारी
दो घूँट पानी।

~ पुष्पा मेहरा

हरी चूड़ियां
बिटिया के हाथों में
हँसती मैया।

पापा के बाद
शूली चढ़ती रही
माँ चुपचाप।

दूर हो गई
मायके की देहरी
माँ तारा बनी।

पढ़ी-लिखी माँ
अनपढ़ ही रही
बच्चों के लिए।

पर्व-त्यौहार
गीतों का गुलदस्ता
सजाती अम्माँ।

थमा दी माँ ने
संस्कारों की पोटली
विदाई बेला।

~ पुष्पा सिंघी

घायल शाम
बिखरा पथ पर
लहू तमाम।

झुमके मिले
खुशी अमलतास
दिखाती फिरे।

भौहों के बीच
रचा लाल बिंदिया
टहली भोर।

फेंकें पत्थर
बसते हैं पाषाण
पहाड़ों पर।

तुम हो बुद्ध
सांसो के मध्य जागो
कहते बुद्ध !

बरसी बूंद
नहाती छुईमुई
पलकें मूंद।

नीम ही नहीं
होता है साथ-साथ
सच ! आग भी !

झरते पात
दुआ में टहनियां
बासंती आस।

क्रोधित रवि
जला रहा घोंसले
कोसते पक्षी।

निशा दुल्हन
कलश लुढ़काये
बिखरे तारे।

गली के पिल्ले
छोड़ गयी ममता
फिरें अकेले।

टहनी घर
लौटे किरायेदार
मनायें हर्ष।

~ भैरव प्रसाद मेहरा
'कबीर'

नारी महान
कर्तव्य की साधना
सुख का सार।

~ मधु गुप्ता "महक"

झुलस रहा
इर्षा द्वेष में व्यक्ति
ठिठका सूर्य।

बीज में छिपा
अद्भुत है रहस्य
जीवन सत्य।

गाँव शहर
वनों पर कहर
पक्षी बेघर।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

घोला है रंग
पत्तों की थालियों में
फूलों के संग !

रंग पहन
लतिका भी लगती
आज दुल्हन !

पूजा की थाली
फूल-धूप-रोली से
भू ने सजा ली।

फूल हैं लाल
डाल गया कौन रे
ऐसा गुलाल !

मधु दे घोल
मृदु स्वरों में आज
कोयल बोल !

राग- विराग
लाल - लाल फूलों पे
पीला पराग।

रोली रचाये
लहरों पर धूप
झिलमिलाये।

आनन्द-नीर
भीग गये आज ये
प्राण अधीर !

दूर देश में
बूढ़ी आँखों का तारा
फोन सहारा !

माँ का आशीष
गर्व से उठाती हूँ
अपना शीश ।

चल न सका
पतझर का जादू
अंकुर फूटे !

एक ही क्रम
जीव और जग का
अस्तित्व सम।

है धरातल
हृदय का कोमल
धरा सा नम।

धरती रानी
आसमानी चुनरी
लहंगा धानी।

बारिश आयी
रेशमी फुहारों से
पृथ्वी नहायी।

तुझे बुलाती
पृथ्वी माँ पल -पल
आ रे बादल !

आशा की धार
प्रीति की पतवार
जायेंगे पार।

~ डॉ. मिथिलेश दीक्षित

चली पुरवा
मदमस्त मगन
फागुन रंग।

उड़ी चुनरी
डोले सब मनुवा
संगिनी संग।

आम्र बौराए
कोयल गीत गाए
झूमे अनंग।

~ मीता अग्रवाल

शाखों की ओट
नभ में चमकते
मेघ के फूल।

इठला रहे
सुनहरे बदरा
तरु के काँधे।

झाँकने लगी
अब्र के झरोखे से
स्वर्णिम धूप।

स्वर्ण फाहो से
दमके तरूवर
गोधूलि वेला।

~ मीनाक्षी कुमावत
'मीरा'

रंग उड़ेगा
मिटेगा द्वेष-भाव
मनेगी होली।

एक हुआ है
हरा व केसरिया
मिलाती होली।

~ मुकेश शर्मा 'ओम'

ग्रीष्म तपन
गुलमोहर हँसे
रक्ताभ दंत।

विकल मन
तपे तन विरहा
मेहा बुलाए।

धूप-छाँव की,
देखी आँख-मिचौली
छाँव ना मिली।

ताश के पत्ते
बिछे चादर पर
ग्रीष्म-सौगात।

रसीली ऋतु
लाई फलों के रस
करे शीतल।

सूर्य दिन में
कितना भी कुपित
शाम को शांत।

शाम शीतल
चांदनी का चंदोवा
तना धरा पे।

~ मंजु महिमा

पकड़े बांह
लाठी टेकता गया
शाम का रवि।

जेठ की धूप
पापड़ से भुंजते
शाख के पत्ते।

बिगड़ा राग
उगल रहा रवि
आग ही आग।

~ डॉ. मंजू यादव

कटते पेड़
चोंच दबाए तृण
दुखी गौरैया।

~ रविबाला ठाकुर

रैन-बसेरा
टूटा लोटा ही सही
लौटी गौरैया।

~ डॉ. रश्मि वार्ष्णेय

जागे नयन
कुलबुलातीं आंतें
रोटी के स्वप्न।

~ राजकुमार चौहान

फागुन घोले
हवा में सतरंग
होली के संग।

माह वैशाख
सूर्य तमतमाए
छाँह लुभाये।

खारे सिंधु में
समर्पित सरिता
खोजे मिठास।

खुद से युद्ध
राग-द्वेष से मुक्त
निखरे बुद्ध।

सूरज क्रुद्ध
किरणें लड़ रहीं
भू पर युद्ध।

चढ़ा है पारा
पस्त पड़ा दिवस
गर्मी का मारा।

ज्येष्ठ महीना
नौतपा का प्रकोप
बहे पसीना।

दृश्य निराला
बंद पुस्तकालय
बिकती हाला।

चैत्र महीना
देवी की आराधना
मौन साधना।

पकी फसल
कनक सी दमके
गेंहू बालियाँ।

बीता फागुन
धूप-बयार करें
गलबहियाँ।

पकी फसल
कनक सी दमके
गेंहू बालियाँ।

बीता फागुन
धूप-बयार करें
गलबहियाँ।

चढ़ा है पारा
बैठा है नीम तले
दिन बेचारा।

उदंड राजा
कर रहा तांडव
मरती प्रजा।

मांगे चिरैया
कटोरी भर पानी
थोड़ी सी छैयाँ।

ज्येष्ठ महीना
आग सी दुपहरी
छाँव प्रहरी।

उदित सूर्य
स्वर्ण सम रश्मियां
बिखेरें आभा।

ओस की बूंदें
सज्जित ज्यों मौक्तिक
निखरी प्रभा।

~ राजकिशोर राजपूत

ओह ये गर्मी
कितनी बैचैनी है
ओढ़े बेशर्मी।

~ राजीव नामदेव
"राना लिधौरी"

बुंदेली हाइकु

सच की खोज
अधूरी रय गयी
झूठौ दिखाय।

सच हिरानौ
अब झूठ की मौज
होत रोजऊ।

विस्तार भओ
झूठ कौ इतै पर
सत्य लाचार।

सच चिमानौ,
झूठ चिचयातइ
की की सुनत।

कलयुग में
झूठौ ऊपर रत
सांचों चपत।

~ राजीव नामदेव
"राना लिधौरी"

चले फाल्गुनी
फूले पलाश सारे
लौटती यादें।

मन बेचैन
चली फाल्गुनी हवा
प्रवासी पिया।

छोटी चिंगारी
औरो के हाथ पड़ी
आग हो गई।

हवा ले आती
बादलों की बारात
बाजे मृदंग।

मौन रहती
मां अबूझ पहेली
सब जानती।

गहरा मन
छोटी सी हलचल
लाए सुनामी।

तपती धरा
पवन भी व्याकुल
ज्येष्ठ महिना।

गर्मी से ज्यादा
दीन को झुलसाती
पेट की आग।

बाजे मृदंग
कान्हा खेले होली
राधा के संग।

जले होलिका
वैमनस्य की आग
बचे प्रह्लाद।

~ राजेन्द्र सिंह राठौड

कर्मठ सूर्य
उर्जा देकर चले
नित्य नूतन।

~ रूबी दास 'अरु'

आँसू के मोती
मन-ही-मन रोती
स्त्री नदी होती।

~ लवलेश दत्त

जीवन भर
निराकार की खोज
भटके मन।

~ वृंदा पंचभाई

पानी में सीप
कौन किसके प्यासे
वो वही जाने।

~ बिद्युत प्रभा "प्रभा"

अनिर्वाण मैं
तुम सम्पूर्ण यज्ञ
दे दो निर्वाण।

पंक का सत्व
पाया स्पर्श तुम्हारा
हुआ स्वर्णिम।

क्षत है कभी
चक्रवात है कभी
संबंध सभी।

आतुर सा मैं
अन्वेषित ज्योति का
अदृश्य तुम।

पाषाण खंड
मृदुल मृदा पर
रहता स्थिर।

कई इच्छाएँ
किंतु एक जीवन
अपूर्ण क्षुधा।

आओ ! वसंत
लिए मलय गंध
दो सप्तरंग।

~ प्रो. विनीत मोहन
औदिच्य

पूर्ण चंद्रमा
स्याह रात तन्हा
ताके आकाश।

कोई नहीं हैं
दूर तक सन्नाटा
मैं और चाँद।

~ डॉ. विभा प्रकाश

छत्तीसगढ़ी हाइकु

चिरई बोले
अँगना दुआरी म
लछमी डोले।

तुलसी चौरा
नानमुन चिरई
फिरे भांवर।

घर दुआरी
पोसे लैका सुग्घर
मोर चिरैया।

अंजोर पानी
मुठ भर चाऊर
गाथे चिरई।

धान मिंजाई
खलिहान चमके
चिरई डोले।

~ शर्मिला चौहान

वन उजड़े
धूप से त्राहि-त्राहि
धरती सूखी।

तपती धरा
ग्लेशियर पिघले
जल बचाएं।

शिखर छूती
न समझना कम
देश की बेटी।

जेठ की धूप
तप रही धरती
जल संकट।

~ शशि मित्तल 'अमर'

सुख के पल
मृगतृष्णा में जल
असार जग।

~ डॉ. शेख अब्दुल वहाब

भोर की बेला
सूरज ने फैलाए
फागुनी आभा।

धूप फागुनी
प्रकृति मन भाए
लगे सुहानी।

परिधि पर
चंचल मन दौड़े
सपने बुने।

कुर्सी की होड़
सियासी घमासान
जोड़ते वोट।

आया बैसाख
धूप की तपिस ने
जमाया शाख।

चरण स्पर्श
अदृश्य सी किरणें
देती आशीष।

चाँदनी रात
कसक सी मन में
होते पी साथ।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

छत्तीसगढ़ी हाइकु

उठ धनुआ
बेर हर उग गे
पकड़ बुता।

साँझ के बेला
सूरज हर भागे
अपन डेरा।

दाऊ के गोठ
खूब पढ़ धनुआ
बनबे रोट।

धन मिर्चा ए
नान्हु के बहुरिया
झार हे बोली।

अंजोर कस
बहुरिया लानेंन
तबो पोतेल।

महुआ फर
टपक टैया बाजे
मोती नियर।

नोनी के दाई
सकेल के गोबर
करे धपाई।

मन के मीत
काबर ते रिसाये
जूना हे प्रीत।

सेमी के नार
छानी हरियाईस
छप्पर फार।

ढेंकी म कुटे
नवा धान चाऊर
बेर ह भागे।

होत बिहाने
बछिया ह हुकरे
दुहे के बुता।

शिव धनुआ
टसके ना मसके
छाईस चंभा।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

कैसा मदारी
उमर बीत गई
रहा भिखारी।

जीवन सारा
तुम पर ही वारा
फिर भी हारा।

हर व्यक्ति की
जानकारी अधूरी
बहस पूरी।

कैसा मदारी
उमर बीत गई
रहा भिखारी।

~ सत्येन्द्र छिब्बर

आया बसंत
फूलों की चारों ओर
फैली सुगंध।

गांव दुआरे
कुनवे की चौपाल
सांझ सकारे।

सूर्य के कण
रेत पर बिखरे
प्रातः निखरे।

जेठ की धूप
धर लेती है कभी
चण्डिका रुप।

गांव दुआरे
कुनवे की चौपाल
सांझ सकारे।

सोन चिरैया
ढूंढती है अपना
कहाँ घोंसला।

पक्षी उदास
कैसे उड़ूं कैद से
करे प्रयास।

जेठ महीना
तपती बसुंधरा
छूटे पसीना।

प्यासी अंखियां
बिन देखे तुमको
बीती सदियां।

नभ में सूर्य
दपदप दहके
अग्नि उगले।

परिंदें झांके
तपती बसुंधरा
नभ को ताके।

वाह रे गर्मी
सूखे नदियां नाले
पांव में छाले।

गर्मी का मेला
खिड़की से झांकता
सूर्य अकेला।

जेठ की धूप
सहम गए पक्षी
निकले आह।

गर्मी प्रचण्ड
धरा रही उबल
मानव चेत।

सूरज खफा
मौसम तपिश का
उमस भरा।

बीता जमाना
कपड़े की गुड़िया
दूल्हा बनाना।

दरख़्त सहे
अंतर्मन की व्यथा
किससे कहे।

रोशनदान
गौरैया का घोंसला
टूटा मकान।

गौरैया खुश
नित्य मिले निवाला
छप्परशाला।
-सुनीता दीक्षित 'श्यामा'

माँ की ममता
सागर सी गहरी
प्यार बरसे।

खारा सागर
नदियां क्यों बेचैन
गहरा पन।

सीप में रेती
गहरे पानी पैठे
बनाती मोती।

गहरापन
धारे मानव मन
पूजते जन।

धरा की व्यथा
जंगल काटे लोग
प्यासी नदियां।

फसल सूखी
भूखे मरते लोग
बढ़ते रोग।

चेहरा ढके
अजीब से मुखौटे
रहते थोथे।

शर्म की लाली
कपोल पर छाई
कलि मुस्काई।
~ सुभाष शर्मा

सहती ज्यादा
माँ कहती है कम
समझें हम।

माँ ने है गढ़ी
सुख की परिभाषा
बच्चों की खुशी।

प्रिय के संग
नित होली के रंग
नित्य वसंत।

हठीला रंग
मन-देह पे चढ़ा
करता तंग।
~ डॉ. सुरंगमा यादव

न्याय न खोज
कटघरे में न्याय
मरता रोज़।
~ सुरेंद्र बांसल

जीवन चित्र
कविता कैनवास
भाव तूलिका।

सूक्ष्म स्पंदन
विस्तारित अनंत
कविता कर्म।

भोली सी आँखें
देखती एकटक
प्यारी गौरैया।

~ **सुशील शर्मा**

स्त्री और बया
श्रम से नीड़ बुने
ममता-मोह।

कैसे अपने
पल पल छलते
टूटे सपने।
~ **सोनम यादव**

छत्तीसगढ़ी हाइकु

सुन ओ सखी
तोर आंखी कजरा
नीक लागथे।
~ **हरावती लकड़ा**

पाकर खोना
सीखा है दीपक से
रोशन होना।

झेलता तन
बाल वृद्ध यौवन
परिवर्तन।

माँ और बच्चा
लगभग नौ माह
देते परीक्षा।

उधड़े हुए
रिश्तों की तुरपाई
क्लिष्ट हैं भाई।

बेटी के घर
पीते नहीं है पानी
रीत पुरानी।

मलते हाथ
खोकर अवसर
हम अक्सर।

मिला न काम
दिहाड़ी मजदूर
रोटी से दूर।

प्रचंड धूप
उबल रहा पानी
प्यासे हैं प्राणी।

नोटों की ओट
लोकतंत्र पे चोट
बिकते वोट

नहीं टिकते
मतलब के रिश्ते
रिसते जाते।

कहती दादी
गुड्डा गुड्डी का खेल
नहीं है शादी।

पुष्पों के प्रेमी
नोंचते नहीं कली
बनते माली।

उछला दूर
डराता है पत्थर
शीशे का घर।

नाजुक कली
मंडरा रहे अलि
शंकित माली।

बिन बरसे
लौट गए बादल
मिला न वन।

बहता चीर
पलकों की प्राचीर
नयन-नीर।

बिन औजार
चट्टानों को चीरती
जल की धार।

वृक्षों की कमी
सूखे ताल तलैया
खोई गौरैया।

तेज बहाव
कूल के प्रतिकूल
जूझती नाव।

सस्ते टिकाऊ
एसी फ्रिज कूलर
हैं तरुवर।

बढ़ता ताप
गिरता जलस्तर
सूखे शजर।

~ हंस जैन

मेरी कविता
बारिश का मौसम
भीगा है मन।

गुलाबी रंग
आसमान में छाया
मन को भाया।

~ डॉ. श्रद्धा वाशिमकर

टेसु की डाली
बासंती अंगड़ाई
उमड़ी बाली।

चहके भोर
देखो अठखेलियाँ
महके बौर।

बिखरे हर्ष
गुड़ी पडवा लावे
नूतन वर्ष।

भक्ति भावना
शक्ति के नव रूप
हरे वेदना।

नेक विचार
मांगे सबके लिए
सुखी संसार।

प्राची बंदगी
योग देवे आरोग्य
सुखी ज़िन्दगी।

मौन ही भक्ति
अतुल्य अनुभूति
यौगिक शक्ति।

~ श्रवण चोरनेले
'श्रवण'

झूठ के आगे
सत्य पड़ा बंधक
आज का सच।

~ श्रीराम साहू

कुंदन जी द्वारा रचित पंच काव्यामृत शैलियों की कृति 'पंचामृत'

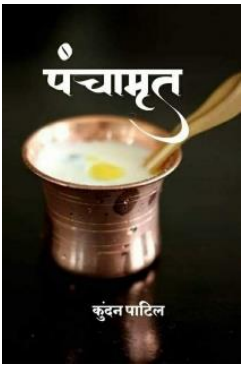

हाइकु कवि कुंदन पाटिल जी जापानी काव्य शैलियों के एक अच्छे जानकार कवि हैं। हाइकु मञ्जूषा में जुड़ कर अपनी अच्छी-अच्छी हाइकु रचनाएं पटल पर भेजते रहते हैं एवं मेरे संपादन में निकली त्रैमासिक समसामयिक हाइकु पत्रिका 'हाइकु मंजूषा' के प्रत्येक अंक में उनकी उत्कृष्ट रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

लेखन एवं प्रकाशन वाकई एक जुनून है। एक वर्ष पूर्व पाटिल जी के मन मस्तिष्क पर अपनी रचनाओं के एक संग्रह के प्रकाशन का ख्याल आया। कुंदन जी की एक कॉल मेरे पास आई, वे मुझसे जानना चाहते थे कि पुस्तक का प्रकाशन कैसे करें ? मैंने उन्हें कुछ मार्गदर्शन किया। मेरे विचार उन्हें पसंद आया, इसलिए उस पर वे बखूबी अमल किये एवं अपनी पुस्तक तैयार कर कुछ दिन पूर्व आवरण पृष्ठ अवलोकन हेतु मेरे पास भेजे। दो दिन तक आवरण पृष्ठ देखा, परंतु आवरण की फोटो पुस्तक के शीर्षक अनुरूप मुझे जँची नहीं। एक चित्र मेरी ओर से उनके पास भेजा, मेरे द्वारा प्रेषित चित्र उन्हें भी पसंद आ गया और उन्होंने मेरे द्वारा भेजे गए चित्र को पुस्तक के आवरण हेतु तपाक से चुन भी लिया। श्री नर्मदा प्रकाशन लखनऊ से प्रकाशित पंचामृत का आवरण चित्र शीर्षक अनुरूप अब बेहद सुंदर बन पड़ा है। मुझे आज अतीव प्रसन्नता हो रही है कि आदरणीय पाटिल जी द्वारा रचित हाइकु, कतौता, ताँका, सेदोका एवं हाइबुन की

पांच शैलियों से रचित पुस्तक 'पंचामृत' अल्प समय में ही छप कर मेरे हाथों में आ चुकी है।

96 पृष्ठीय इस पुस्तक में सर्वप्रथम 22 हाइबुन रचना, फिर 105 सेदोका, 114 ताँका, 110 कतौता एवं 139 हाइकु क्रमशः संग्रहित हुए हैं। 22 हाइबुन रचनाओं में भारत के प्रसिद्ध पचमढ़ी, अमरनाथ, श्रीनगर, गंगासागर, प्रयागराज, सतपुड़ा, ग्वालियर, हरिद्वार, उज्जैन, नादुरीगढ़ जैसे रम्य ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा के जीवंत व रोमांचकारी प्रसंग प्रस्तुत हुए हैं, साथ ही हाइकु के गद्य से जुड़ी पद्य हाइकु रचना भी सुसंयत सफल संयोजित हुई हैं।

कवि पाटिल जी सरल व्यक्तित्व के धनी, अच्छे कुशल रचनाकार के साथ-साथ एक सरल सहज कृषक भी हैं। कृषक होने का उन्हें नाज भी है। अपनी सेदोका रचना में अपना परिचय प्रस्तुत करते हैं - **"धरती पुत्र/कठोर परिश्रम/कल्याण के जो द्वार/किसान हूं मैं/थल जल आकाश/मेरे भाग्य विधाता।"**

इस सेदोका रचना में ब्रह्मांड से स्वयं का सहज नाता बड़ी सरलता से स्थापित कर लेते हैं। कवि के पास जो है, उसमें वह पूर्ण संतुष्ट है। जगत से कुछ पा लेने की कोई इच्छा, चाहत, कामना नहीं है। कवि के इस सरल सहज मन वाले व्यक्तित्व को प्रस्तुत करता है एक सेदोका और देखें-

"नव उड़ान/किशोर अवस्था में/उम्मीद का जहाज /पाने की इच्छा/ खोने को कुछ नहीं/खुला है आसमान।"

यहां खुला आसमान उनके सरल जीवन के ढंग को प्रस्तुत करता सुंदर सा प्रतीक बन गया है।

देवास के कवि द्वारा रचित ताँका काव्य में ईश्वर के प्रति सुंदर आस्था एवं जीवन के उच्च दार्शनिक पक्ष उद्घाटित हुए हैं-

"कर्मों का लेख/जीवन का दस्तूर/ कठपुतली/सुख-दुख नियत/ईश्वर की महिमा।"

पाटिल जी एक उच्च आदर्शवादी कवि हैं। उनकी चाहत भी है कि मनुष्यों को संस्कारों से परिपूर्ण होना चाहिए एवं उसके कर्म भी निस्वार्थ होने चाहिए। कतौता में

यही कामना करते हुए लिखते हैं- **"निस्वार्थ कर्म/ संस्कारों का पहरा/खिले मधुर फूल।"**

पाटिल जी के हाइकुओं में पर्यावरण संकट पर गहरे व्यंग के रूप में सुंदर शब्द चित्र प्रस्तुत हुए हैं - **"कैसे संभव?/चाहत हरियाली/हाथ कुल्हाड़ी।"**

"निशुल्क पानी/अनमोल बनाया/व्यर्थ बनाया।"

"वृक्ष काटते/प्रकृति का अस्तित्व/हम मिटाए।"

संग्रह में अनेक अच्छे हाइकु प्रस्तुत हुए हैं, कुछ नमूने और देखें- **"कवि कल्पना/प्रकृति का आधार/सत्य का ज्ञान।"**

"विकास भेंट/वन पहाड़ खेत/डूबता सूर्य।" (संग्रह का यह हाइकु बेहद उत्कृष्ट बन पड़ा है।)

प्रभु मिलन/जीवन अनमोल/संत शरण।"

कुंदन जी द्वारा रचित पंच काव्यामृत शैलियों की पुस्तक 'पंचामृत' वास्तव में एक उत्कृष्ट कृति के रूप में प्रकाशित हुई है। इस कृति में एक से बढ़ कर एक हाइकु, ताँका, चोका, सेदोका, एवं हाइबुन की अच्छी-अच्छी रचनाएं संग्रहित हुई हैं। मेरी ओर से मित्रवर आदरणीय कुंदन पाटिल जी को जापानी काव्य की एक सफल एवं उत्कृष्ट कृति के प्रकाशन की अनेकानेक शुभकामनाएं, बधाइयां एवं साधुवाद अर्पित है।

दिनांक - 03 मई 2024 **- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक]**

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका (त्रैमासिक पत्रिका)

वार्षिक सदस्यता राशि- 400/- पंच वर्षीय सदस्यता राशि 1600/- संरक्षक - 10000/-

हाइकु मञ्जूषा के सदस्य

(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)

(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय), (8) अविनाश बागड़े (पंच वर्षीय), (9) अजय चरणम् (पंच वर्षीय), (10) श्रवण चोरनेले 'श्रवण' (पंच वर्षीय), (11) डॉ. पूर्वा शर्मा (पंच वर्षीय), (12) आभा दवे (पंच वर्षीय), (13) आरती परीख (पंच वर्षीय)

(1) प्रतिभा त्रिपाठी (वार्षिक), (2) डॉ. सुरंगमा यादव (वार्षिक), (3) सरस दरबारी (वार्षिक), (4) मधु गुप्ता (वार्षिक), (5) विद्या चौहान, (6) पूनम भू , (7) विद्युत प्रभा (वार्षिक), (8) माया वसन्दाणी (वार्षिक), (9) चन्द्र प्रभा (वार्षिक), (10) राजेन्द्र सिंह राठौड़ (वार्षिक), (11) प्रवीण सिंह बी. सिन्दल (वार्षिक), (12) बन्दना गुप्ता (वार्षिक), (13) आर्विली आशेन्द्र लूका (वार्षिक), (14) इंदिरा किसलय (वार्षिक), (15) निर्मला हांडे (वार्षिक), (16) प्रमोदिनी शर्मा (वार्षिक), (17) पुष्पा मेहरा (वार्षिक), (18) अर्चना यदु अनुपम (वार्षिक), (19) डॉ. निहाल चंद्र शिवहरे (वार्षिक)

'हाइकु मञ्जूषा' देश की एकल त्रैमासिक समसामयिक हाइकु पत्रिका का सदस्य बन कर आप भी हाइकु विधा के प्रसार में सहयोगी बनें। अप्रैल-जून 2024 के बाद जिन सदस्यों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, इस सूची में उन सदस्यों का नाम विलोपित है। पत्रिका प्राप्ति की निरंतरता के लिए विलोपित तथा नवीन हाइकुकार/पाठक मित्रों से विशेष आग्रह है कि (वार्षिक/पंचवर्षीय) नवीन/नवीनीकरण शुल्क प्रेषित कर पत्रिका के प्रसार में आप अपना अमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें। आपके स्नेहिल सहयोग की प्रतीक्षा में आपका मित्र-

-प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा
मो.नं. 7828104111

हार्डबाउंड, पेपर बैक, ई-बुक व ऑडियो-बुक
ISBN के साथ किसी भी
भाषा में प्रकाशन के लिए हमें काल करें या लिखें।

सर्व भाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

E-mail : sbtpublication@gmail.com
Contact : 011-3501-3521, 9205461387

THINK PEN
भोजपुरी प्रकाशन
देशज

sbtpublication sarvbhashatrust Sarv Bhasha Trust
sarvbhashatrust sbhashatrust

हमारे यहाँ से प्रकाशित 34+ भाषाओं में 800+ पुस्तकें
www.sarvbhasha.in पर उपलब्ध हैं।

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

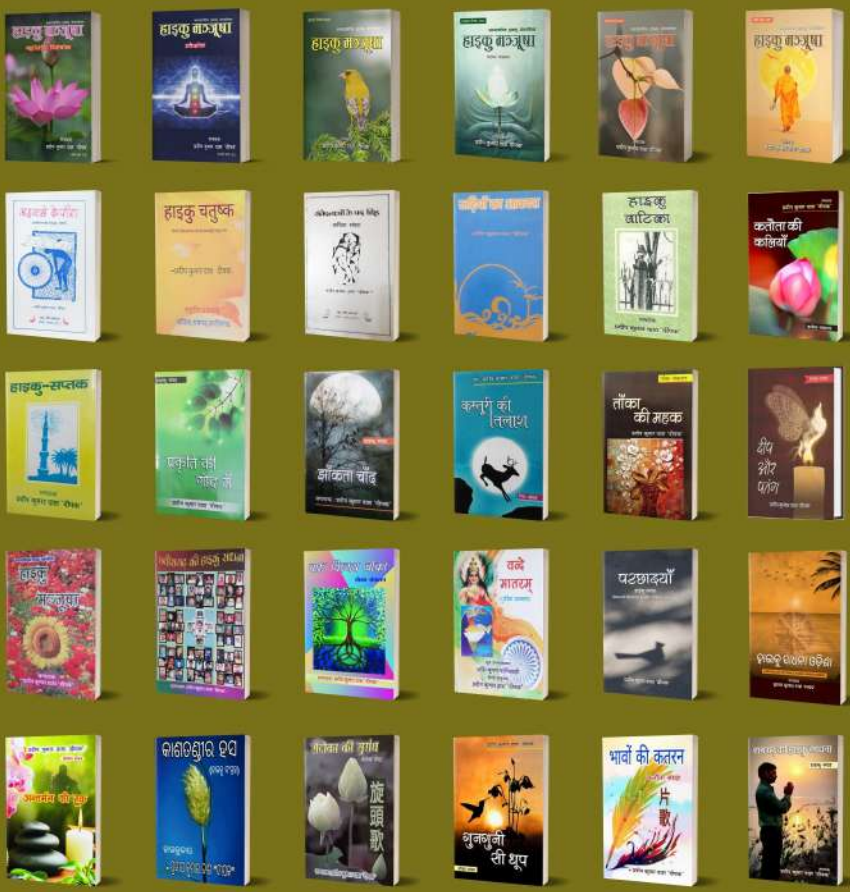

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

011-3501-3521, 9205461387